अंक योजना

विषय: हिन्दुस्तानी संगीत

प्रश्न	अपेक्षित उत्तर	अंकों का वितरण	कुल अंक
1.	गौरहार बानी	1	1
2.	अचल स्वर–'सा'	1	1
3.	भातखण्डे पद्धति के अनुसार 'खाली' का चिन्ह 'O'	1	1
4.	'नियामत खाँ' का वास्तविक नाम सदारंग था।	1	1
5.	चार प्रकार के वाद्य: तत्, अवनद्ध, सुषिर व घन	$^1/_4+^1/_4+^1/_4+^1/_4$	1
6.	बाँसुरी – सुषिर वाद्य वीणा – तत् वाद्य पखावज – अवनद्ध झाँझ – घन	$^1/_2+^1/_2$	1
7.	ध्रुपद में प्रयोग होने वाली तालें– चौताल, मत्त, ब्रह्म, लक्ष्मी, सूल, तीव्रा, इत्यादि	$^1/_2+^1/_2$	1
8.	संगीत की गति को लय कहते हैं। लय तीन प्रकार की होती हैं। विलम्बित, मध्य और द्रुत	$^1/_2+^1/_2$	1
9.	राग–भैरव आरोह: सा <u>रे</u> ग म प <u>ध</u> नि सां अवरोह: सां नि <u>ध</u> प म ग <u>रे</u> सा	$^1/_2+^1/_2$	1
10.	ठेका: **तीनताल** 1 2 3 4 | 5 6 7 8 | 9 10 11 12 | 13 14 15 16 धा धिं धिं धा | धा धिं धिं धा | धा ति तिं ता | ता धिं धिं धा x | 2 | o | 3 **कहरवा** 1 2 3 4 | 5 6 7 8 धा गे न ति | न क धि ना x | o **दादरा** 1 2 3 | 4 5 6 धा धि ना | धा ति ना x | o	1+1	2

<table>
<tr><td></td><td>एकताल
<table><tr><td>1</td><td>2</td><td>3</td><td>4</td><td>5</td><td>6</td><td>7</td><td>8</td><td>9</td><td>10</td><td>11</td><td>12</td></tr><tr><td>धिं</td><td>धिं</td><td>धागे</td><td>तिरकिट</td><td>तू</td><td>ना</td><td>क</td><td>त्ता</td><td>धागे</td><td>तिरकिट</td><td>धिं</td><td>ना</td></tr><tr><td>x</td><td></td><td>o</td><td></td><td>2</td><td></td><td>o</td><td></td><td>3</td><td></td><td>4</td><td></td></tr></table></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>11.</td><td>आरोही वर्ण– निचले स्वर से ऊपर स्वर तक जाने को आरोही वर्ण कहा जाता है।

अवरोही वर्ण– ऊँचे स्वर से निचले स्वर तक जाने को अवरोही वर्ण कहा जाता है।</td><td>1+1</td><td>2</td></tr>
<tr><td>12.</td><td>‘एकताल’
<table><tr><td>1</td><td>2</td><td>3</td><td>4</td><td>5</td><td>6</td><td>7</td><td>8</td><td>9</td><td>10</td><td>11</td><td>12</td></tr><tr><td>धिं</td><td>धिं</td><td>धागे</td><td>तिरकिट</td><td>तू</td><td>ना</td><td>क</td><td>त्ता</td><td>धागे</td><td>तिरकिट</td><td>धि</td><td>ना</td></tr><tr><td>x</td><td></td><td>o</td><td></td><td>2</td><td></td><td>o</td><td></td><td>3</td><td></td><td>4</td><td></td></tr></table></td><td>1+1</td><td>2</td></tr>
<tr><td>13.</td><td>मात्रा: संगीत में समय नापने के पैमाने (scale) को मात्रा कहते हैं।
जैसे तीनताल – 16 मात्रा
एकताल – 12 मात्रा इत्यादि
सप्तक– क्रमानुसार सात शुद्ध स्वरों के मेल को सप्तक कहते हैं।
सा, रे, ग, म, प ध, नि</td><td>1+1</td><td>2</td></tr>
<tr><td>14.</td><td>संगीत रत्नाकर के अंतर्गत ‘‘श्रवणाज्छ्रूतयो मत:’’ अर्थात् जो सुना जा सके, उसे श्रुति कहते हैं।

श्रुतियों की संख्याओं के लिए जैसे 22, 66 से अनन्त तक विभिन्न दृष्टिकोण हैं।

या

संगीत में रागों के वर्गीकरण को थाट कहा जाता है। कुल दस थाट माने गए हैं।
1. बिलावल
2. खमाज
3. काफी
4. आसावरी
5. भैरवी
6. भैरव
7. कल्याण
8. मारवा
9. पूर्वी
10. तोड़ी</td><td>1+1</td><td>2</td></tr>
</table>

15.	तीन मूल स्वर साम गान के हैं– उदात्त, अनुदात एवं स्वरित उदात्त का सांगीतिक अर्थ उच्च, अनुदात्त का नीचा और स्वरित बीच का स्वर है।	1+1	2
16.	**मार्ग संगीत**– इसकी खोज ब्रह्मा आदि देवों द्वारा हुई व प्रथम प्रस्तुति भगवान शिव के समक्ष 'भरत' आदि मुनियों द्वारा की गई। **देशी संगीत**– यह लोगों की रूचि के अनुसार उनके मनोरंजन के लिए गायन, वादन और नृत्य का सामूहिक संगीत है।	1+1	2
17.	'ध्रुपद'– पुस्तक का नाम– मानकुतूहल वास्तविक नाम– नियामत खाँ व फिरोज़ खाँ राजा का नाम– मोहम्मद शाह	$^1/_2+^1/_2+^1/_2+^1/_2$	2
18.	राग - काफी स्थाईः गुणी गावन काफी राग खरहर प्रिय मेल जनित कोमल गनी उज्ज्वल पर सुर पंचमवादी साध (स्वरलिपि लिखिए) **दो आलाप** 1. सा सा रे रे, ग़, ग़, म म, प - - - प ग़ रे नि़ 2. रे रे ग़ ग़ म म म प ध नि़ ध प म ग़ रे नि़ सा - - -	1+2+2	5
19.	सामवैदिक स्वरों का वर्णन– पहले तीन स्वर, - उदात्त, अनुदात्त व स्वरित से सात सामवैदिक स्वर क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वर का निर्माण। लौकिक स्वरों से सम्बन्ध *या* पं. अहोबल का हिन्दुस्तानी संगीत में योगदान रागों के वास्तविक 29 स्वरों से 12 स्वरों तक प्रायोगिक विश्लेषण से अनुचित स्वरों को हटाना	$2^1/_2+2^1/_2$	5
20.	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को जन साधारण तक पहुँचाने में पं. भातखंडे की भूमिका अहम है। 1. उन्होंने अनेक रचनाओं का संकलन किया, पुनर्विस्थापन किया तथा अनेक संगीत विद्यालयों की स्थापना की जिससे संगीत का प्रचार-प्रसार हो सके। 2. उन्होंने स्वर-लिपि पद्धति का आविष्कार किया और संगीत की विभिन्न पुस्तकों का संकलन व प्रकाशन किया	$2^1/_2+2^1/_2$	5

या पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का हिन्दुस्तानी संगीत में योगदान का प्रभाव 1. संगीत संरचनाओं में भक्ति संगीत का नवीनीकरण और संगीत संस्थाओं की स्थापना 2. अपनी नई स्वरलिपि पद्धति बनाई। लेख व किताबों का प्रकाशन। और गांधर्व महाविद्यालय की स्थापना।		